[Most Important UP Board 2021]

बिहारीलाल

[जीवन-परिचय एवं कृतियाँ]

रीतिसिद्ध कविवर बिहारीलाल जी का जन्म सन् 1595 ई० में ग्वालियर के पास बसुवा गोबिन्दपुर नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम केशवराय था। ये माथुर चौबे कहे जाते थे।

इनके विषय में एक उक्ति प्रचलित है —

"जन्म ग्वालियर जानिए, खण्ड बुंदेले बाल।
तरुनाई आई सुघर, मथुरा बसि ससुराल॥"

इनका बचपन बुंदेलखण्ड में बीता तथा युवावस्था में ससुराल में रहने लगे, जो मथुरा में थी।

बिहारी जयपुर के राजा मिर्जा जयसिंह के दरबारी कवि थे। जयसिंह इन्हें एक दोहे पर एक स्वर्णमुद्रा का पुरस्कार देते थे। जब जयसिंह अपनी नयी पत्नी के प्रेम में मग्न होकर राज्य की ओर ध्यान नहीं देता है तो बिहारी एक दोहा लिखकर भेजते हैं —

"नहि पराग नहि मधुर मधु,
नहि विकास इहि काल।
अली कली ही सों बिंध्यो,
आगे कौन हवाल॥"

Scanned by TapScanner

यह दोहा पढ़कर जयासिंह की आँखे खुली, वह पुनः राजकाज में लग गया और इन्हे सम्मानित भी किया। बिहारी की मृत्यु सन् 1663 ई० में होगयी थी।

बिहारी की भाषा ब्रज थी। अलंकार प्रियता एवं गूढ़ार्थ व्यंजना इनके दोहो की प्रमुख विशेषता है।

बिहारीलाल अपनी एक मात्र रचना 'बिहारी सतसई' के लिए हिन्दी-साहित्य-संसार में अमर हो गए। सतसई में 700 से अधिक दोहे भक्ति, नीति एवं शृंगार से सम्बन्धित हैं। सतसई के विषय में उक्ति प्रसिद्ध है—

"सतसइया के दोहरे,
ज्यों नावक के तीर।
देखन में छोटे लगे,
घाव करे गम्भीर॥"

Subscribe
Gyansindhu Coaching Classes
On YouTube

Scanned by TapScanner